## विचार बिन्दु

**अगर इंसान सुख-दुःख की चिंताओं से ऊपर उठ जाये तो आसमान की ऊँचाई भी उसके पैरों तले आ जाये। –शेख सादी**

# इंसान क्यों बना हैवान?

'एक तरफा प्यार में छात्र द्वारा शिक्षिका की तलवार से हत्या''- बांसवाड़ा

''लाल बना काल, बेटे ने मां की चाकू से हत्या की, फिर ट्रेन से कटकर जान दी''- जयपुर

''पति-पत्नी अपने दो बच्चों के साथ टैंक में कूदे, चारों की मौत''- बाड़मेर

''शादी नहीं करने से नाराज युवती ने खुदकुशी की''- जयपुर

''सूदखोरी की आग में व्यापारी की मौत'' बयान के आधार पर मामला दर्ज, जांच शुरू

''खुद को आग लगाकर ट्रांसपोर्ट नगर थाने में घुसा प्रॉपर्टी डीलर, मोटा ब्याज वसूलने और प्रताड़ना का मामला साझेदार के खिलाफ दर्ज''

''यूपी में मुस्लिम युवती ने हिंदू बनकर शिक्षक से शादी की, सुहागरात पर मौत के घाट उतारा''-कुशीनगर

''ढाबा संचालक पर डंडे व सरियों से हमला, मोबाइल और 8000 रुपए लूटे, बेहोश होने तक पीटते रहे-जयपुर

''स्कॉर्पियो से बदमाशों ने बाइक सवार ज्वेलर को टक्कर मारी - 10 किलो चांदी 1 तोला सोना और नकदी लूटी''- जयपुर

''लखनऊ में दामाद ने सास-ससुर को उतारा मौत के घाट''

''दिल्ली में घरेलू नौकर ने मालकिन की डांट के बाद मालकिन और उसके बेटे की हत्या की''

''साठ वर्षीय फूफा के प्यार में शादी के बाद पति की हत्या करवाई''

उपरोक्त समाचार पत्रों की हेडलाइंस केवल एक या दो दिन की ही है। ऐसे ही समाचार हमें प्रतिदिन नियमित रूप से पढ़ने को मिलते रहते हैं और यह हाल केवल जयपुर या राजस्थान का ही नहीं है अपितु पूरे देश का है।

क्या यही वह संस्कृति है जिसका गुणगान करते हम नहीं थकते? क्या यही वह सभ्यता और समाज है जिस पर हम गर्व कर सकते हैं और जिसके आधार पर विश्वगुरु कहलाना चाहते हैं?

भारत सदैव सामाजिक सौहार्द्र, पारिवारिक संबंधों की मधुरता, मालिक - नौकर के बीच घरेलू संबंधों के लिए जाना जाता रहा है। सहिष्णुता, सहयोग, समन्वय, सदाशयता एवं संवेदनशीलता हमारी संस्कृति के विशिष्ट गुण रहे हैं।

अब ऐसा क्या हो गया कि प्रत्येक मानवीय संबंध चाहे वह पति-पत्नी का हो, पिता-पुत्र का हो, मां-बेटे का हो, मालिक-नौकर का हो ग्राहक-दुकानदार का हो, दोस्तों का हो, केवल और केवल हवस का शिकार हो गया है। यह हवस पैसे की हो सकती है, शारीरिक हो सकती है या फिर अहम की तुष्टि की भी हो सकती है।

हम उपरोक्त लिखित घटनाओं का आकलन करेंगे तो पाएंगे कि इन सब के मूल में मनुष्य की बढ़ती घृणा, यौन हिंसा, ईर्ष्या और अति भौतिकतावादी प्रवृत्ति है। हमारे समाज में इस प्रकार का पतन किस प्रकार हुआ और क्यों हम इस स्थिति में पहुंच गए कि प्रतिदिन हमें रिश्तो को तार-तार होते देखना पड़े या थोड़ी सी भौतिक सुख सुविधाओं के लिए किसी मासूम की हत्या करने के समाचार पढ़ने को मिलें?

एक मालकिन ने अपने घरेलू नौकर को थोड़ा सा डांट दिया तो उसने गुस्से में उत्तेजित होकर अपनी मालकिन और उसके 14 साल के मासूम बेटे की हत्या कर दी। उसके मन में एक क्षण के लिए भी यह विचार नहीं आया कि इन्हीं लोगों ने उसे काम दिया है। यह अविश्वसनीय लगता है किंतु हमारे देश में यह वास्तविकता बन चुका है ।

कोई दामाद अपने सास-ससुर की हत्या कर दे तो इसे क्या कहा जाएगा? जिस व्यक्ति के साथ सात फेरे लेकर जनम-जनम का साथ निभाने का वादा किया हो, उसी की हत्या जब कोई अपने प्रेमी के साथ मिलकर करवा दे तो इसे नैतिक पतन की पराकाष्ठा ही कहा जाएगा।

रिश्ते-नाते तो जैसे भूतकाल की बातें हो गई हैं। आजकल की घटनाएं देखकर 'उपकार' फिल्म के प्रसिद्ध गाने की ये पंक्तियां बरबस याद आ जाती हैं :-

''कसमें-वादे प्यार वफ़ा, सब बातें हैं बातों का क्या,
कोई किसी का नहीं, झूठे नाते हैं, नातों का क्या?''

आइए, हम इस प्रकार की स्थिति के लिए जिम्मेदार कारणों का विश्लेषण करने का प्रयास करें।

सबसे प्रथम कारण तो यह है कि संयुक्त परिवार की प्रथा लगभग समाप्त हो गई है। पहले दो-तीन पीढ़ियां एक साथ रहती थीं जिससे परिवार में ही साथ में रहने के लिए अत्यावश्यक गुण बचपन से ही विकसित हो जाते थे। जब सब मिल-बैठ कर भोजन करते थे तो सबके साथ बात करने का बहुत अवसर मिला करता था ।

बच्चों को सोने से पहले दादा-दादी या माता-पिता उनको पुरानी अच्छी कहानियां सुनाकर सुलाते थे। एक पर कोई कष्ट आता तो दूसरे सहायता करने को तत्पर रहते थे। बीमार होने पर पड़ोस के लोग भी परिजनों की ही तरह सेवा में लग जाते थे।

व्यवसाय या नौकरी के लिए बाहर जाने के कारण अधिकांश परिवार, एकल परिवार हो गए हैं। परिवार में केवल पति-पत्नी और उनके एक या दो बच्चे होते हैं। चाचा-चाची, मामा-मामी, मौसा-मौसी, बुआ-फूफा जैसे रिश्ते आजकल केवल नाम मात्र के रह गए हैं। लड़कियों की बहुत पढ़ाई होने लगी है। इस कारण आर्थिक रूप से वे आत्मनिर्भर हो गई हैं और वे भी पति के जितना ही कमाने लगी हैं। आर्थिक रूप से उनका आत्मनिर्भर होना अनुचित नहीं है, किंतु इसके कारण छोटा-मोटा विवाद भी तलाक तक पहुंच जाता है। किसी भी प्रकार की उत्तेजनात्मक स्थिति में उनके लिए अपने पति से अलग होने का निर्णय लेते समय उनके मन में कतई ख्याल नहीं आता है कि जिस परिवार को वे छोड़कर अचानक जा रही हैं, वह उनका दूसरा घर था।

**क्या यही वह संस्कृति है जिसका गुणगान करते हम नहीं थकते? क्या यही वह सभ्यता और समाज है जिस पर हम गर्व कर सकते हैं और जिसके आधार पर विश्वगुरु कहलाना चाहते हैं? भारत सदैव सामाजिक सौहार्द्र, पारिवारिक संबंधों की मधुरता, मालिक - नौकर के बीच घरेलू संबंधों के लिए जाना जाता रहा है। सहिष्णुता, सहयोग, समन्वय, सदाशयता एवं संवेदनशीलता हमारी संस्कृति के विशिष्ट गुण रहे हैं।**

तकनीकी विकास ने भी अतिरिक्त समस्या उत्पन्न कर दी है। पहले टीवी आया और परिवार के सभी सदस्य एक साथ बैठकर टीवी देखते थे, किंतु इसके कारण आपस में बात करके दुख दर्द बांटने का अवसर कम होता गया। जब से मोबाइल आ गया है, स्थितियां एकदम बदल गई हैं। युवा पूरा समय अकेले मोबाइल पर बिताते हैं। ऐसे दृश्य बिल्कुल आम हैं कि 10 व्यक्ति बैठे हैं और सभी आपस में बात नहीं कर रहे हैं। सब अपने अपने मोबाइल में ही व्यस्त हैं। व्यक्ति का अकेलापन मानसिक अवसाद की स्थिति पैदा करता है। जब उसे लगता है कि उसे किसी से कोई लेना-देना ही नहीं है तो फिर दूसरे भी उसकी परवाह करना छोड़ देते हैं। शायद यही कारण है की विदेशों की तरह यहां भी संतानें, माता-पिता को वृद्धाश्रम में भेजने लगी हैं। जिन मां-बाप ने अनेक कष्ट उठाकर अपने बच्चों को बड़ा किया और अपनी रातें उनकी सुख-सुविधाओं का ध्यान रखने में बिता दीं, आज वही बच्चे थोड़े से भौतिक स्वार्थ और सुविधा के लिए उन्हें ओल्ड एज होम में भेजने से भी नहीं हिचकते ।

आज किसी व्यक्ति के लिए पूरी दुनिया 'मैं' में सिमट कर रह गई है। इसमें दूसरे किसी का प्रवेश होना ही संभव नहीं है। यहां तक कि पति-पत्नी में भी यही बात लागू होती है। हाल ही में सोनम नाम की एक लड़की ने मध्य प्रदेश में राजा से शादी की और शादी के साथ ही उसने अपने पति की हत्या करने की साजिश रचना प्रारंभ कर दिया था। एक युवती ने अपने फूफा से सम्बन्ध के कारण शादी होते ही अपने पति को मरवा दिया।

पहले जहां बच्चे अच्छी नैतिक मूल्यों वाली कहानियां सुनकर बड़े होते थे, आजकल बचपन से ही हिंसा, अश्लीलता, घृणा और नफरत के वीडियो, फिल्में मोबाइल पर देखकर बड़े हो रहे हैं। आजकल तो बच्चा पैदा होते ही जब रोने लगता है तो मां-बाप उसे मोबाइल के माध्यम से चुप कराना ज्यादा सही समझने लगे हैं। मोबाइल की लत धीरे-धीरे उनके लिए कई प्रकार की मानसिक और शारीरिक बीमारियों का कारण बन जाती है। अधिकांश शारीरिक रोग जैसे स्पॉन्डिलाइटिस हो, कमर में दर्द हो, आंखों का खराब होना होना हो या मानसिक प्रदूषण की बात हो, सभी की जड़ में मोबाइल का दुष्प्रभाव ही है। मोबाइल के हानिकारक प्रभाव को देखते हुए ही जापान में 10 वर्ष की आयु तक बच्चों को मोबाइल से दूर रखा जाता है। ऑस्ट्रेलिया में भी 16 साल से कम आयु के बच्चे सोशल मीडिया अकाउंट नहीं खोल सकते हैं।

भारत में स्थिति इस के ठीक विपरीत है। जब कभी किसी जगह इंटरनेट बंद हो जाए या मोबाइल खो जाए तो जिस प्रकार की व्यग्रता मोबाइल धारकों में देखी जाती है उसको देखकर ऐसे लगता है कि शायद मोबाइल सदैव से, जीवन का अनिवार्य भाग रहा है। वास्तविकता यह है कि आज से 25-30 वर्ष पूर्व मोबाइल नहीं था, तो शायद जीवन कहीं अधिक सुविधाजनक और आनंददायक था।

मोबाइल के कारण जिस प्रकार की हिंसा और यौन हिंसा वाली फिल्में कच्ची उम्र में बच्चों को देखने को मिल रही हैं उसी के कारण उन घटनाओं को हम देखते हैं जिनका उल्लेख इस आलेख के प्रारंभ में किया गया है ।

आज एक-दूसरे की लाश पर पांव रखकर आगे बढ़ने की जो गला काट प्रतिस्पर्धा होती जा रही है वह भी इस प्रकार की हिंसक घटनाओं को बढ़ावा दे रही है ।

पति-पत्नी में आ रही रिश्तो में बढ़ती कड़वाहट और बिखरते रिश्तों को देखते हुए ही, आजकल अनेक युवा विवाह के बंधन में बंधने तक से बचने लगे हैं। कई लोग विवाह करने के बाद भी बच्चे पैदा करना एक मुसीबत का कारण मानते हैं। इस प्रकार की मनोवृति यदि थोड़े समय और चलती रही तो किस प्रकार यह सृष्टि बचेगी और किस प्रकार पारिवारिक संबंध बचेंगे, इस पर भी प्रश्न चिन्ह लगता है। तब, मनुष्य और जानवर में जो अंतर है वह भी समाप्त हो जाएगा।

इंसान है तो इंसानियत उसमें होनी चाहिए। जब कोई छात्र अपनी शिक्षिका का तलवार से गला काट ले या कोई कोई घनिष्ठ मित्र थोड़े से पैसे के लालच में अपने निकट दोस्त की हत्या कर दे, तो इसे हैवानियत ही कहा जाएगा। यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि मनुष्य इंसान तो नहीं बन पाया, शैतान और हैवान अवश्य बन गया।

यहां यह नहीं कहा जा रहा है कि मोबाइल की कोई उपयोगिता नहीं है, किंतु इस इसे काम में लेने के लिए जिस प्रकार के विवेक, समझ और बुद्धिमानी की आवश्यकता है वह विकसित करने की जिम्मेदारी माता-पिता के साथ ही समाज के प्रबुद्ध लोगों और शिक्षकों की भी है। यह तब ही संभव है जब वे स्वयं भी इन पर अत्यधिक निर्भरता को कम करें और इसके उपयोगी पक्ष को ही सामने रखते हुए विवेकपूर्ण कार्य करे।

मोबाइल के माध्यम से आज कच्ची बस्ती में रहने वाला व्यक्ति भी यह जानता है कि लंदन, वाशिंगटन या मुंबई में किस प्रकार का जीवन धनी लोग व्यतीत कर रहे हैं और फिर वह भी उसी प्रकार का जीवन जीने की लालसा पाल लेता है। अपनी क्षमता के आधार पर उतना पैसा नहीं कमा पाने की स्थिति में वह किसी भी असामाजिक या आपराधिक कार्य में लिप्त होने से नहीं हिचकता।

हम मनुष्य को इंसान बनाने की बात करते हैं और इसके लिए विभिन्न प्रकार के प्रयास भी करते हैं, किंतु मनुष्य इंसान बनना तो दूर, वह तो समय के साथ-साथ हैवान बनता जा रहा है।

देश के कर्णधारों, शिक्षाविदों, चिंतकों और जनप्रतिनिधियों को गंभीरतापूर्वक समाज में तेजी से बढ़ रही हिंसक मनोवृति पर लगाम लगाने के उपाय करने होंगे। क्या इसके लिए कुछ पुराने समय की अच्छी बातों को पुनर्स्थापित नहीं किया जा सकता? आशा करनी चाहिए कि समय रहते किए गए प्रयासों से नई पीढ़ी एक-दूसरे के प्रति आदर, सद्भाव, प्रेम, स्नेह और मिठास के आधार पर रिश्ते बनाएगी ताकि हम अपनी विरासत पर गर्व कर सकें। यदि हमने समय रहते इस पर कोई कार्य नहीं किया तो फिर आने वाली पीढ़ी हमें कतई माफ नहीं करेगी। समाज एक बार पतन के गर्त में चला जाएगा तो फिर वहां से ऊबर पाना ही असंभव हो जाएगा।

**–अतिथि सम्पादक,**
**राजेन्द्र भाणावत**
**( पूर्व आई.ए.एस. अधिकारी )**

# इतिहास के झरोखे से मध्य पूर्व एशियाई देशों की राजनीति और इजरायल

महावीर सिंह

**29 जून को प्रकाशित लेख से आगे--**

राष्ट्रदूत के 29 जून 2025 के अंक में हमने जाना कि वर्तमान इजरायली राज्य का गठन, 1916-17 से कैसे कैसे विभिन्न समझौतों, घोषणाओं, प्रस्तावों के जरिए हुआ।

इस अंक में हम वर्तमान इजरायल- फिलिस्तीनी भूभाग की भौगोलिक स्थिति और इतिहास में इस भूभाग में घटी प्रमुख घटनाओं की जानकारी के साथ साथ यहूदी, ईसाई, इस्लाम धर्मों के माईथोलजी और ऐतिहासिक दृष्टि से आपसी संबंधों और संघर्षों को समझने का प्रयास करेंगे।

भौगोलिक स्थिति :- इजरायल का भू भाग जिसे इतिहासकार विभिन्न नामों यथा फिलिस्तीन, यहूदा राज्य, कनान, लेवांट आदि लिखते आए है, वह भूमध्य सागर से लगता है जिसके दक्षिण पश्चिम में मिश्र की सीमा लगती है। लेबनान और जॉर्डन की सीमा भी इजरायल से लगती है। इसके आस पास के दूसरे देश पूर्व में जॉर्डन, उत्तर में सीरिया व फिलिस्तीन, तुर्क स्थित है। जॉर्डन नदी इजरायल जॉर्डन की सीमा तय करती है और इसके पश्चिम का भाग, वर्तमान में विवादित वेस्टबैंक व गाजा पट्टी का है।

तेल अवीव, बेरुत, रामल्ला, जूडिया, बेथलेहम,. गैलीली, जाफ़ा, हाइफा, हिब्रोन, एलाट, अकाबा आदि इस क्षेत्र के प्रमुख शहर है। अकाबा की खड़ी से लालसागर, अरब सागर का समुद्री मार्ग खुलता हैं। इनमें से अधिकांश शहर भूमध्य सागर के तट पर हैं। व्यापार-वाणिज्य-नोपरिवहन- कृषि की दृष्टि से यह क्षेत्र सदैव से महत्वपूर्ण रहा है

तुर्क के क्षेत्र से बहकर आने वाली तथा कई ऐतिहासिक सभ्यताओं की जननी नदिया दजला (टिगरिस) व फरात (युफ्रेटिस) आदि इस क्षेत्र में तुर्क, सीरिया, इराक आदि देशों में बहकर अरब सागर में मिलती हैं। इन नदियों के बीच का भूभाग मेसोपोटामिया के नाम से जाना जाता था। इसी क्षेत्र में सूमेरीयन, अक्काडियन, बेबिलोनियन, असीरियाई सभ्यताएं पनपी जो विश्व की ज्ञात सर्वाधिक पुरानी सभ्यताओं में से हैं।

इतिहास के झरोखे से फिलिस्तीन क्षेत्र की राज व्यवस्था :-फिलिस्तीन लेवेंट के नाम से जाने जाने वाले बड़े क्षेत्र का हिस्सा है जो इतिहास में विभिन्न सभ्यताओं का चौराहा रहा है। 1948 से पहले, फिलिस्तीन अरबों, यहूदियों और ईसाइयों की एक विविध आबादी का घर था, क्योंकि सभी समूहों का इस क्षेत्र, विशेष रूप से यरुशलम शहर से धार्मिक संबंध था। फिलिस्तीन क्षेत्र पर समय समय पर अक्कादियन, बेबिलोनिया, असीरियन, रोमन-बाईजेंटियन, यूनानी, फारसी (परसियन- ईरानी), मिश्र, सेलजुक तर्क, अरब शासकों ने राज किया या प्रभावित किया। यूनानी लेखकों के लेखन को सही मानते हुए कुछ इतिहासकारों के अनुसार 12 सदी ईशा पूर्व से सातवीं ईसापूर्व सदी तक यहां एक फलती-फूलती सभ्यता थी। कुछ का मानना है कि 5 वी (बीसी) से पहले के विश्वसनीय प्रमाण नहीं हैं किंतु इसके बाद इस क्षेत्र के बारे में ठीक लेखकों का लिखा काफी कुछ मिलता है।

सुमेरियन सभ्यता, मानव इतिहास की कृषि आधारित, बहुदेव वादी, शुरुआती शहरी सभ्यताओं में से एक थी, जो 4500 ईसा पूर्व के आसपास दक्षिणी मेसोपोटामिया में उभरी थी। इसने इस क्षेत्र को बड़े पैमाने पर प्रभावित किया। बहुदेव वादी अक्काडियन सभ्यता, प्राचीन मेसोपोटामिया की एक दूसरी सभ्यता थी जो लगभग 2334 ईसा पूर्व से 2154 ईसा पूर्व तक अस्तित्व में थी। यह अक्कड़ शहर और उसके आसपास के क्षेत्र में केंद्रित थी, और इसमें अक्काडियन और सुमेरियन भाषी लोग शामिल थे। अक्काडियन साम्राज्य को इतिहास का पहला साम्राज्य माना जाता है, जिसने मेसोपोटामिया, लेवांट क्षेत्रों और अनातोलिया में महत्वपूर्ण प्रभाव डाला। इस सभ्यता का प्रसिद्ध राजा सारगौन दी ग्रेट था जिसने 24वी से 22वी शताब्दी ईसापूर्व में कई विजय प्राप्त की। गुटियन लोगों के आक्रमणों से यह सभ्यता 2154 ईशा पूर्व में समाप्त हो गई।

असीरियन सभ्यता भी इसी क्षेत्र में पनपी। यह तीन काल खंडों :- 2000 से 1600 बीसी, 1365 से 1056 बीसी, 911 से 612 ईसापूर्व में बनती बिगड़ती रही। यह सभ्यता भी बहुदेव वादी थी। राजनीति व धर्म का गठजोड़ था। इस सभ्यता बड़े टावर नुमा जिग्गुराट मंदिर के लिए भी जानी जाती है।इस सभ्यता का विस्तार मिश्र तक था। निन्वेह इसकी राजधानी थी जिसे 612 बीसी में बेबीलोन और मीडियनों ने नष्ट कर दिया। इस प्रकार इस सभ्यता का अंत हो गया। वर्तमान इराक व पुराना अशुर शहर इसका प्रमुख क्षेत्र था।

लगभग 720 ईसा पूर्व में, असीरियाई राजा तिग्लथ-पाइलसर ने उत्तरी इज़राइल के राज्य पर विजय प्राप्त की। दस इजरायली/यहूदी जनजातियों को असीरिया में निर्वासित कर दिया, जिन्हें यहूदी धर्म में 'खोई हुई जनजातियां' माना जाता है। इसके पश्चात नव बेबिलोनिया साम्राज्य के राजा नबूकदनेसर द्वितीय द्वारा 586 बीसी में इजरायल क्षेत्र में हमला कर,प्रथम बार यहूदियों के पवित्र पर्वत मंदिर को नष्ट किया।

63 बीसी में, जब इजरायल में यहूदी सभ्यता 1,000 साल से ज़्यादा पुरानी हो चुकी थी, रोम ने,जनरल पोम्पी के नेतृत्व में यहूदी राष्ट्र पर कब्ज़ा कर लिया। इस समय, रोमनस ने इस क्षेत्र की आबादी के एक हिस्से को निर्वासित कर दिया।रोमन शासन 636 ईस्वी तक रहा। यहूदियों के प्रति रोमनस का शुरुआती व्यवहार कठोर था। इसके कारण क्षेत्र में रोम के गवर्नरों के विरुद्ध विद्रोह भी हुए। कोखबा विद्रोह के बाद, इजरायल से, यहूदियों का निष्कासन भी हुआ। रोम में अपना वर्चस्व स्थापित करने के लिए 63 बीसी के आसपास ही येरुशलम के पवित्र मंदिर को जलाया।यह दूसरी बार हुआ। रोमन लोग इस क्षेत्र को जूडिया या सीरिया या प्लास्टिन के नाम से जानते थे।

636 ईस्वी तक रोमन साम्राज्य का हिस्सा रहने के बाद अरबों, तर्क ने इस पर अधिकार किया। ईरानी साम्राज्य (पार्थियन और सासानी) ने 2 शताब्दी ईसा पूर्व से 7 वीं शताब्दी ईस्वी (614-628)तक फिलिस्तीन के कुछ भागों पर शासन किया।वर्ष 614 में ईरानी पार्थियन शासकों में पूर्वी रोमन साम्राज्य (बाईजेंटीन) ने येरुशलम छीन लिया।1099 में प्रथम धर्म युद्ध के समय यरुशलम पर ईसाईयों में कब्जा कर लिया।

यहूदी धार्मिक पुस्तक तनख/तोरा व ओल्ड टेस्टामेंट में यहूदियों के मिश्र में बसने या जबरन ले जाए जाने और वहां से भागने का उल्लेख आता है। इस घटना के समय, कुछ इतिहासकार इजरायल को मिश्र का उपराज्य मानते है। इसका एक उल्लेख मेंरनेपटा स्टैल में लगभग 1207 ईशा पूर्व का मिलता है। यहूदी धार्मिक पुस्तकों में भी 13वी बीसी के आसपास की घटना में मूसा के नेतृत्व में यहूदियों का मिश्र की कैद अर्थात जबरिया दासत्व से भागने का उल्लेख है। इतिहासकारों में मतभेद है कि यह जबरन दासत्व/कैद थी या कनान क्षेत्र के यहूदियों का मिश्र में रोजगार के लिए स्वेच्छा से जाना था। मूसा की नेतृत्व में मिश्र से पलायन की घटना को यहूदी लोग हर साल फराह के त्यौहार के रूप में मनाते है।

तुर्क़ ओटोमन साम्राज्य ने 1517 से 1917 तक इस क्षेत्र के अधिकांश भाग पर शासन किया, लेकिन प्रथम विश्व युद्ध के बाद ब्रिटेन ने फिलिस्तीन और पूर्व साम्राज्य के अन्य क्षेत्रों पर नियंत्रण कर लिया। इस समय, लीग ऑफ नेशंस ने फिलिस्तीन के लिए एक ब्रिटिश शासनादेश जारी किया, जिसने ब्रिटेन को इस क्षेत्र पर प्रशासनिक नियंत्रण (मैंडेट) दिया।

लीग आफ नेशन्स के द्वारा ब्रिटेन को कब्जा देने के बाद से ही दूसरे देशों में बसे लोग प्रताड़नाओं के कारण इस क्षेत्र में आकर बसने लगे।यहां जमीन की करली।घर बनाकर खेती करने लगे। जगह-जगह छोटी-छोटी यहूदी बस्तियां, शहर बसने लगे और अंततः फिलिस्तीन पर यहूदियों का कब्जा स्थायी कब्जे में बदल गया है।

फिलिस्तीनी क्षेत्र में नई बस्तियां बसाना और मूल फिलिस्तीनियों को शरणार्थी बना देने की चल/नीति अब भी जारी है।

फिलिस्तीन में यहूदी, ईसाई, इस्लाम, तीनों के धार्मिक स्थल है :- यरुशलम में यहूदियों का माउंट मंदिर है जिसे जन मान्यताओं के अनुसार 1000 ईसापूर्व यहूदियों के राजा सोलोमन में बनाया। यहूदियों का यह सबसे बड़ा धार्मिक आस्था का स्थान है। इस मंदिर को प्रथम बार बेबीलोन के राजा नाबुकदनेसर सेकेंड में द्वारा आक्रमण कर 586 ईस्वी में नष्ट कर दिया। मंदिर का पुनर्निर्माण किया गया,जो सेकेंड टेंपल कहलाता है जिसे रोमनस द्वारा 63 बीसी के आसपास दृष्टि बार तोड़ा, जलाया।

इसी क्षेत्र में सिनाय पर्वत है जहां मान्यता के अनुसार यहूदी ईश्वर यहोवा में पैगम्बर मूसा को 10 आगाएं सुनाई जो यहूदी धर्म का आधार है। अन्य यहूदी धार्मिक स्थल तिबेरियस, रामल्ला, हेब्रोन शहरों में है। इसी स्थान, माउंट टेंपल पर अल-अकसा मस्जिद है जो मुस्लिम धर्म में मक्का, मदीना के बाद तीसरा सबसे पवित्र स्थान माना जाता है। माना जाता है, इसका निर्माण मुहम्मद साहब के मित्र खलीफा इल - अब्र खट्टाब में करवाया।मान्यता है कि इसी स्थान पर डोम आफ अर्क से पैगम्बर मुहम्मद साहब ने जन्नत की यात्रा की थी। ईसाईयों के भी यहां कई धार्मिक--पवित्र स्थान है।

बेथलहम का चर्च ऑफ नेटवीटी (ईशा जन्मस्थान), अल-अक्सा मस्जिद(जहां ईशा को फांसी पर लटकाया),गाजा का सेंट जार्ज मठ, रामल्ला का सेंट एंड्रयू चर्च आदि। तनख व ओल्ड टेस्टामेंट (बाइबल का एक भाग) में समय भिन्नता के साथ भौगोलिक वर्णन और कहानी में कई समानताएं है, व्याख्याओं में अंतर है। तीनों धर्म आदि पुरुष अब्राहम को मानते है। पैगम्बर प्रथा मानते है। मोटे तौर पर एकेश्वर वादी है। ईसाई धर्म में ईश्वर के साथ साथ उसके पुत्र और आत्मा की अवधारणा भी है। महान संतों की मूर्तियां भी है। इस्लाम और यहूदीधर्म में इसकी पूर्ण वर्जना है।

**–महावीर सिंह, पूर्व आईएएस**

# अंत्योदय शिविर : श्रीगंगानगर के चरणजीत को 48 वर्ष बाद आवासीय पट्टा मिला

**अपने** ही घर का पट्टा नहीं होने से चरणजीत सिंह दोहरी जिन्दगी जी रहा था। उसके पास अपना मकान तो था लेकिन पट्टा न होने के कारण उसका मालिकाना हक नहीं था, अतिक्रमण के नाम पर कभी भी उसे तोड़ा जा सकता था, उसे यह भी डर था कि कोई भूमाफिया इसे अपना ही आवास सिद्ध न कर दें या कोई अतिक्रमण हो जाये।

- **48 सालों में चरणजीत सिंह ने कई कार्यालयों के चक्कर लगाए, लेकिन कभी नियमों के कारण और कभी दस्तावेजों की कमी बताकर उसे पट्टा नहीं दिया गया**
- **चरणजीत सिंह ने बताया कि पट्टा नहीं मिलने के कारण अनेक योजनाओं के लाभ से वंचित रहा**

इस चिन्ता से मुक्त होने में उसे पूरे 48 साल लग गये। इन 48 सालों में उसने कई कार्यालयों के चक्कर लगाए लेकिन कभी नियमों के कारण और कभी दस्तावेजों की कमी बताकर उसे पट्टा नहीं दिया गया।

**अंत्योदय शिविर में शिविर प्रभारी ने आवश्यक रिपोर्ट व अन्य कार्यवाही करते हुए चरणजीत सिंह को आवासीय पट्टा सौंपा।**

श्रीगंगानगर जिले की रायसिंहनगर पंचायत समिति की ग्राम पंचायत 71 आरबी में पंडित दीनदयाल उपाध्याय अंत्योदय संबल पखवाड़ा के शिविर में चरणजीत सिंह पुत्र भूपेन्द्र सिंह निवासी 13 आरबी ने आवासीय पट्टे के लिये प्रार्थना पत्र प्रस्तुत किया। शिविर प्रभारी ने आवश्यक रिपोर्ट व अन्य कार्यवाही करते हुए चरणजीत सिंह को आवासीय पट्टा सौंपा।

चरणजीत सिंह ने बताया कि गत 48 वर्षों से पट्टा नहीं मिलने के कारण अनेक योजनाओं के लाभ से वंचित रहा। अब उसे अपना मालिकाना हक मिला है, शांति के साथ जी सकता हूं कि बुढ़ापा चिन्तामुक्त निकलेगा, शांति के साथ मर सकता हूँ कि मेरे बच्चे आशियाने के लिए भटकेंगे नहीं। आवासीय पट्टा मिलने से लोन लेकर इसका विस्तार या मरम्मत भी करवा सकता हूँ।

चरणजीत सिंह ने भजनलाल सरकार का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि मेरे जैसे कई लोगों के बरसों से लम्बित काम शिविर में हुए हैं। पूरे राजस्थान में पता नहीं कितने हजारों, लाखों लोगों के जरूरी काम हुए होंगे।

**अनिल कुमार शाक्य,**
**जनसम्पर्क अधिकारी,**
**श्रीगंगानगर**

## अंत्योदय शिविर में लोगों की परिवेदनाओं का समाधान

**रतनगढ़/राजलदेसर,** (निसं)। रतनगढ़ तहसील के ग्राम पंचायत सिमसिया में सोमवार को पंडित दीनदयाल उपाध्याय अंत्योदय संबल पखवाड़े के तहत शिविर का आयोजन किया गया। सरपंच परमेश्वर लाल मेघवाल की अध्यक्षता में लगे शिविर में तहसीलदार जितेंद्र सिंह, नायब तहसीलदार पूजा पारीक, एडीओ लक्ष्मीनारायण सैनी, ग्राम विकास अधिकारी हिम्मत सिंह, कनिष्ठ सहायक भगवानाराम, गिरदावर सुरेंद्र सिंह पटवारी गोपाल राहड़ सहित अधिकारी मौजूद रहे। इस दौरान नामांतरण, रास्तों के विवाद, आपसी बंटवारा, पट्टा वितरण आदि समस्याओं का मौके पर समाधान किया। ग्राम विकास अधिकारी हिम्मत सिंह ने बताया कि ''हरियालो राजस्थान'' के तहत वृक्षारोपण किया गया व गांववासियों को अधिकाधिक पेड़-पौधे लगाने और उनकी नियमित रूप से देखरेख करने का आव्हान किया। शिविर में 84 राजस्व के मामले, 20 पट्टे, 85 स्वामित्व पार्सल वितरित किए गए। तहसीलदार जितेंद्र सिंह ने कहा शिविर के दौरान आमजन से प्राप्त होने वाले प्रार्थना पत्र पर तत्काल कार्रवाई का प्रयास किया जाए और सरकार की योजनाओं से पात्र वंचित लोगों को लाभान्वित करें। इसके अलावा अधिक से अधिक पेड़ पौधे लगाए ताकि पर्यावरण संरक्षण के लिए एक अनूठा उदाहरण पेश हो।

## राशिफल मंगलवार 7 जुलाई, 2025

पंडित अनिल शर्मा

आषाढ़ मास, शुक्ल पक्ष, त्रयोदशी तिथि, मंगलवार, विक्रम संवत 2082, ज्येष्ठा नक्षत्र रात्रि 3:15 तक, शुक्ल योग रात्रि 10:17 तक, कौलव करण दिन 11:35 तक, चन्द्रमा आज रात्रि 3:15 से धनु राशि में संचार करेगा।

**ग्रह स्थितिः** सूर्य-मिथुन, चन्द्रमा-वृश्चिक, मंगल-सिंह, बुध-कर्क, गुरू-मिथुन, शुक्र-वृष, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह राशि में।

आज रवियोग रात्रि 3:15 से आरम्भ होगा। आज भौम प्रदोष व्रत है। आज से जया पार्वती व्रत आरम्भ होगा।

**श्रेष्ठ चौघड़ियाः** चर 9:07 से 10:49 तक, लाभ-अमृत 10:49 से 2:14 तक, शुभ 3:56 से 5:38 तक।

**राहूकालः** 3:00 से 4:30 तक। सूर्योदय 5:43, सूर्यास्त 7:20

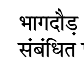

**मेष**

अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। आज पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। परिवार में स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है।

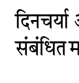

**सिंह**

घर-परिवार के कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। परिवार में अतिथियों के आगमन से दिनचर्या अस्त-व्यस्त हो सकती है। स्वास्थ्य संबंधित मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी।

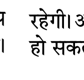

**धनु**

आज अनावश्यक धन खर्च हो सकता है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। अरज अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है। मन असंतोष बना रहेगा।

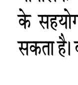

**वृष**

परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। आज परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

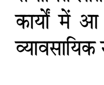

**कन्या**

आर्थिक मामलों में परिचितों से सहयोग मिल सकता है। संभावित स्त्रोतों से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। व्यावसायिक सफलता से मनोबल बढ़ेगा।

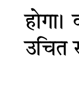

**मकर**

आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। आय में वृद्धि होगी। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में उचित सोच-विचार हो सकता है।

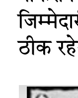

**मिथुन**

व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों को महत्वपूर्ण जिम्मेदारी मिल सकती है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। स्वास्थ्य में सुधार होगा।

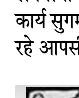

**तुला**

आर्थिक कारणों से अटके हुए व्यावसायिक कार्य बनने लगेंगे। संभावित धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्य सुगमता से बनने लगेंगे। परिवार में चल रहे आपसी मतभेद समाप्त होंगे।

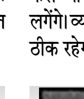

**कुंभ**

व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी।

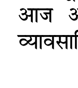

**कर्क**

घर-परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। आज अतिथियों का आगमन रहेगा। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

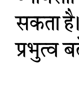

**वृश्चिक**

व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक योजना का क्रियान्वयन हो सकता है। नौकरीपेशा व्यक्तियों का प्रभाव-प्रभुत्व बढ़ेगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

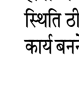

**मीन**

नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी